Edition 2024 | Hindi

DOCTOR NEXT STEP DOCTOR

LIVING LONGER BOOKS

Finally A Revolution in Indian Health Care

NEXT STEP LIVING LONGER BOOKS

हमारे रिलेशनशिप या हमारी मैरिज लाइफ में जिन्दगी के 15 साल ऐड करें!

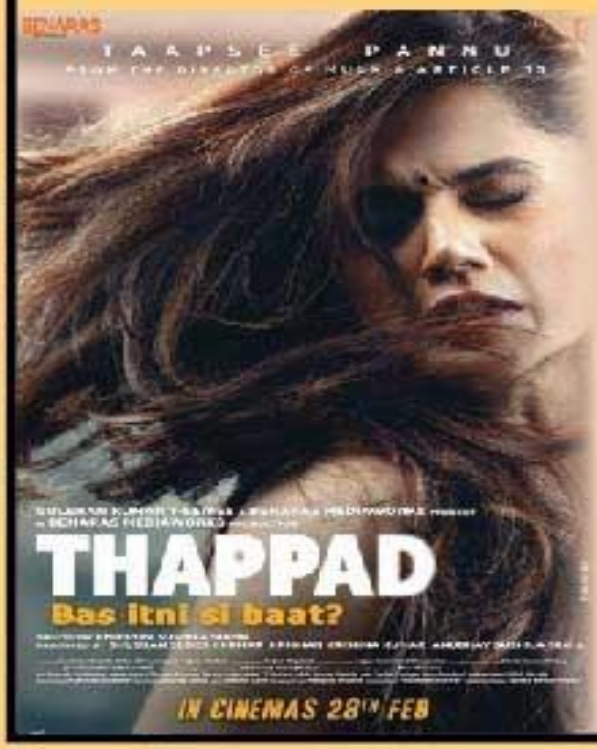

लेखक:
(प्रो.) डॉ. एस. ओम गोयल,
एम.डी./डी.एम.
एम्स, एम.ए.एम.सी. और
दिल्ली विश्वविद्यालय से
एम.डी. मेडिसिन, यूएसए
डी.एम./फैलोशिप, यूएसए

?वषय सूची

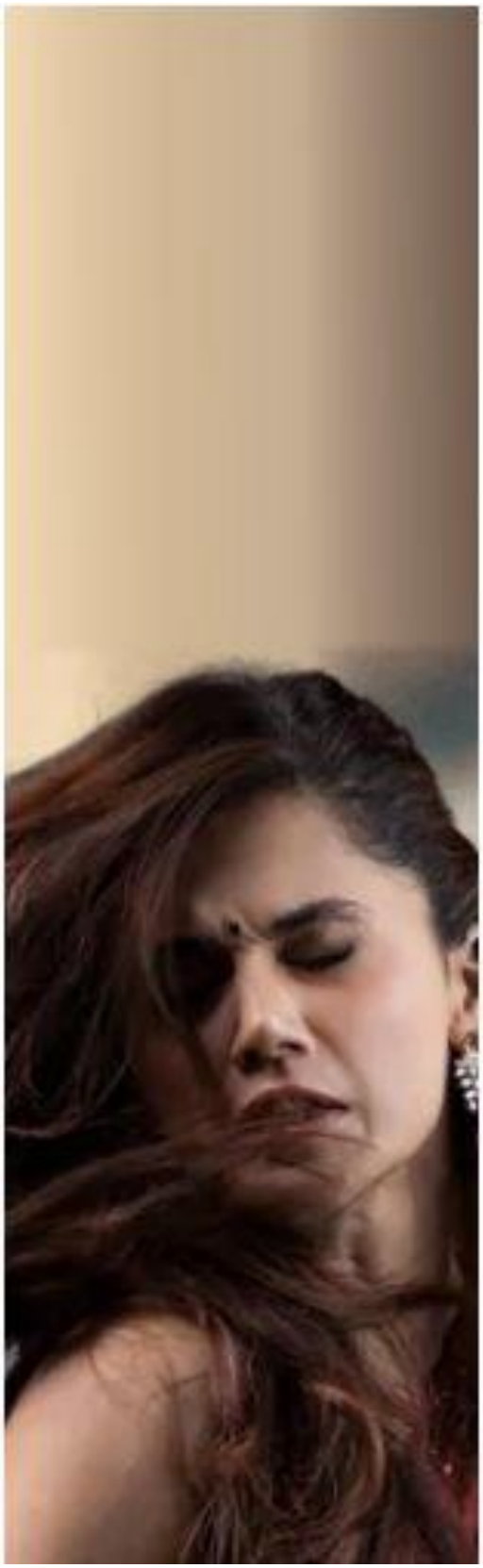

पाठ - 1

1. प?रचय

पाठ – 2

2. डायलॉग 1

पाठ – 3

3. डायलॉग 2

पाठ – 4

4. डायलॉग 3

पाठ – 5

5. डायलॉग 4

पाठ – 6

6. डायलॉग 5

पाठ – 7

7. डायलॉग 6

पाठ – 8

8. डायलॉग 7

पाठ – 9

9. डायलॉग 8

पाठ – 10

10. डायलॉग 9

पाठ – 11

11. डायलॉग 10

पाठ – 12

12. डायलॉग 11

पाठ – 13

13. डायलॉग 12

पाठ – 14

14. डायलॉग 13

❓वषय सूची

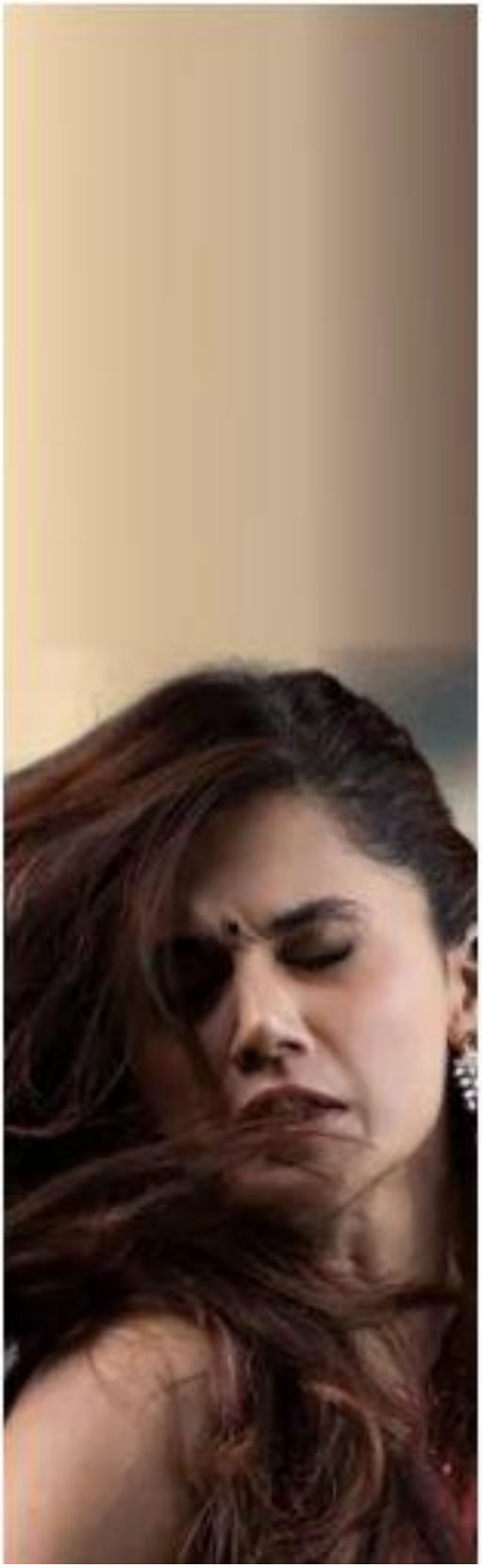

पाठ - 15

15. डायलॉग 14

पाठ – 16

16. डायलॉग 15

पाठ – 17

17. डायलॉग 16

पाठ – 18

18. डायलॉग 17

पाठ – 19

19. डायलॉग 18

पाठ – 20

20. डायलॉग 19

पाठ – 21

21. डायलॉग 20

पाठ – 22

22. डायलॉग 21

पाठ – 23

23. डायलॉग 22

पाठ – 24

24. डायलॉग 25

पाठ – 25

25. डायलॉग 26

पाठ – 26

26. डायलॉग 25

पाठ – 27

27. डायलॉग 26

पाठ - 1

प�रचय

यह पुस्तक उन सभी म�हलाओं के ल्एि एक स्तोत्र (Ode) है िजन्ह म्ने जाना है।

चाहे वह मेर मां हो, मेर प्ी हो, मेर ब्हनो या मेर बेट।

म आप सभी को सलाम करता हूँ!

फल्म देखने के बाद पुस्तक "थप्पड़" मेरे ारा महसूस कए गए प्रभाव को सामने लाती है और यह मूल रूप से फल्म के कु छ संवाद क व्याख्या है।

(पाठ 1 चत्र -1)

जब म भारत और संयु राज्य अमे रका म म हलाओं के व्यवहार को देखता हंू, तो मुझे भारत और यूएसए दोन म द कोण म इतना अंतर दखाई देता है क मुझे लगा क मुझे

इसके बारे म लखना चा हए। अमे रका म म हलाओं के साथ बराबर का व्यवहार कया

जाता है। वे पुरुष के साथ समान रूप से िजम्मेदा रय को भी नभातीं ह। उन्ह भानक तरह नीचा नह ं दखाया जाता। इस लए, म ने महसूस कया क एक बेटा, प त औ

�पता होने केनाते यह मेरा कतर्व्य है �क उन प�रिस्थ�तय� को सामने लाया जाए जिन पर ह्म� ध्यान देने क� आवश्यकता है।

ह्म अपने आद मय को एक मजबूत आधार केसाथ सह दशा दखाने क जरूरत है, िजससे क वो हमार लड़कय को बोझ न समझे जैसा क हमार लड़कयां महसूस क ह।

पाठ - 2

डायलॉग 1 - क्या आप जानते ह? क उस एक थप्पड़ से क्या हुआ था? वह सारे अनफे यर थप्पड़ मुझे साफ़ साफ़ दखने लगे थे जो मुझे पड़े तो थे पर म ने पहले महसूस नह ं कये थे।

डायलॉग 1 - क्या आप जानते ह? क उस एक थप्पड़ से क्या हुआ था? वह सारे अनफे यर थप्पड़ मुझे साफ़ साफ़ दखने लगे थे जो मुझे पड़े तो थे पर म ने पहले महसूस नह ं कये थे।

एक युवा प ी से

एक म हला को जीवन के हर ेत्र म अ धकतर दन म अ धक भेदभाव का सामना करना पड़ता है। चाहे वह घर पर ह, सड़क पर या कायर्स्थल पर। यह जानबूझकर हो सकता है या नह ं भी हो सकता है। ले कन यह हमेशा उस भूत क तरह होता है िजसे आप देख नह ं सकते ह, ले कन इसक उपिस्थ त को महसूस कर सकते ह। जब हमारे जीवन म एक बड़ घटना घटती है जहां हम उन सभी छोटे-छोटे भेदभाव को महसूस करते ह जो हमारे जीवन के व भन्न ेत्र म घ टत हुए होते ह। चाहे वह ऑटो रक्शा चालक हो जो अपनी टपोर भाषा म "मैडम कहाँ चलोगी" कहता हो या काम पर

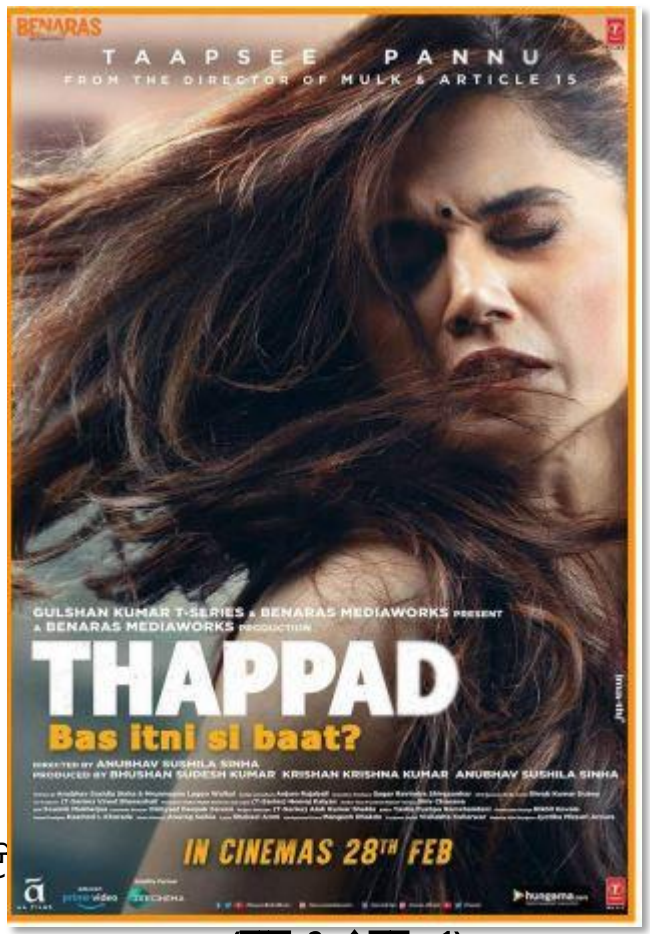

(पाठ 2 चत्र -1)

वह सहकम� जो चालाक� से कहता हो ?क "क्या आज आप कॉफ़े म� इंट्रेस्टेड ह?"।

पाठ - 3

डायलॉग 2 : यार तुम ◌कतनी बेवकू फ हो, तुमसे शाद◌ क◌ है म◌ने, तुम्ह◌ सह रहा हूँ◌!, एहसान मानो मेरा!

डायलॉग 2 : यार तुम ◌कतनी बेवकू फ हो, तुमसे शाद◌ क◌ है म◌ने, तुम्ह◌ सह रहा हूँ◌!, एहसान मानो मेरा!

एक युवा प◌ी से

ज्यादातर म◌हलाएं अपने वैवा◌हक घर◌ म◌ ह◌ रोज प◌पात का सामना करती ह◌। भारतीय समाज ने म◌हलाओं को इतना सहनशील बना ◌दया है ◌क अब वे अपनी बात रखना या बोलना भूल चुक◌ ह◌। चाहे वह उनके प◌त ह◌, या ससुर ह◌, या सास ह◌, या भाभी ह◌ - वे अपने रोज के काय◌ म◌ रोज ह◌ कु छ ऐसे ताने सुनते ह◌, ◌क हर ◌दन के साथ वे या तो हार मान लेती ह◌ या वे इसे छोड़ देती ह◌।

शुक्र है ◌क हम नार◌वाद का उदय होते हुए देख रहे ह◌ जो शायद उन खोई हुई आवाज◌ को वापस लाएगा।

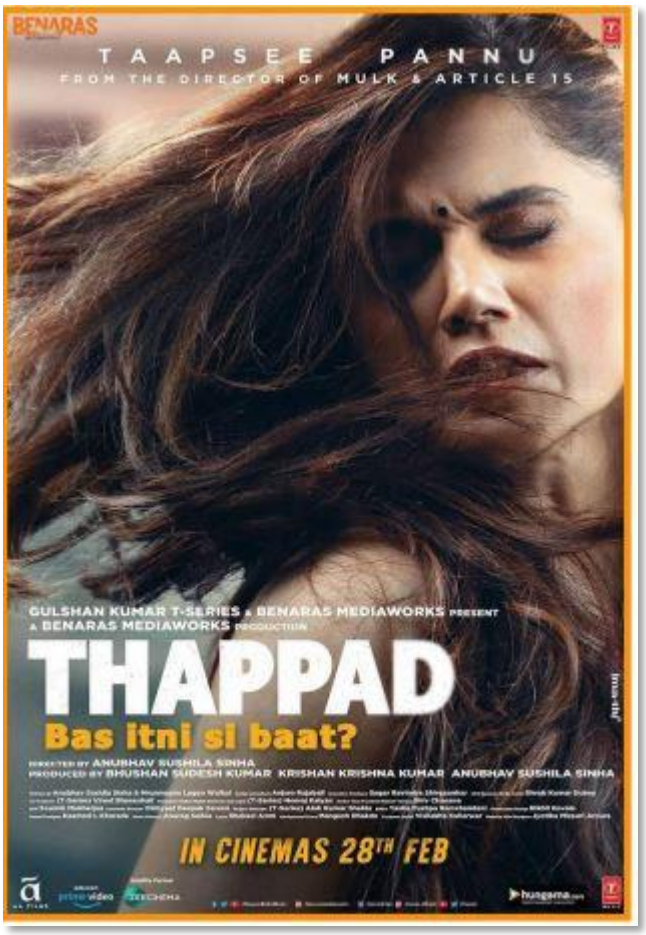

(पाठ 3 ◌चत्र -1)

पाठ - 4

डायलॉग 3 : यार प्लीज खाओ यार, मेऱ वाइफ पकाने म़ तो एक्सपटर् है, उसके टैल़ट क़ कुछ तो कदर करो।

डायलॉग 3 : यार प्लीज खाओ यार, मेऱ वाइफ पकाने म़ तो एक्सपटर् है, उसके टैल़ट क़ कुछ तो कदर करो।

एक युवा प़ी से

यह पुरुष़ क़ माऩसकता को दशार्ता है ़क वे यह सु़नि़त करते ह़ ़क वे अपने दोस्त़, प़रवार और सहक़मर्य़ के सामने अपनी ट्रॉफ़ पि़य़ को ़दखाएं। यह म़हलाओं के अ़तसंवेदनशील बनाता है जब प्रत्येक टॉम,

़डक और हैऱ जैसे लोग़ जजम़ट्स देते ह़ उन्ह़ उनके लुक्स, उनक़ ़श़ा, उनके खा पकाने के कौशल और उनके दै़नक जीवन म़ उन्ह़ उनक़ हर पसंद के ़लए जज ़कया जाता है। जब़क पुरुष जंगल के राजा क़तरह खुलेआम घूमते ह़।

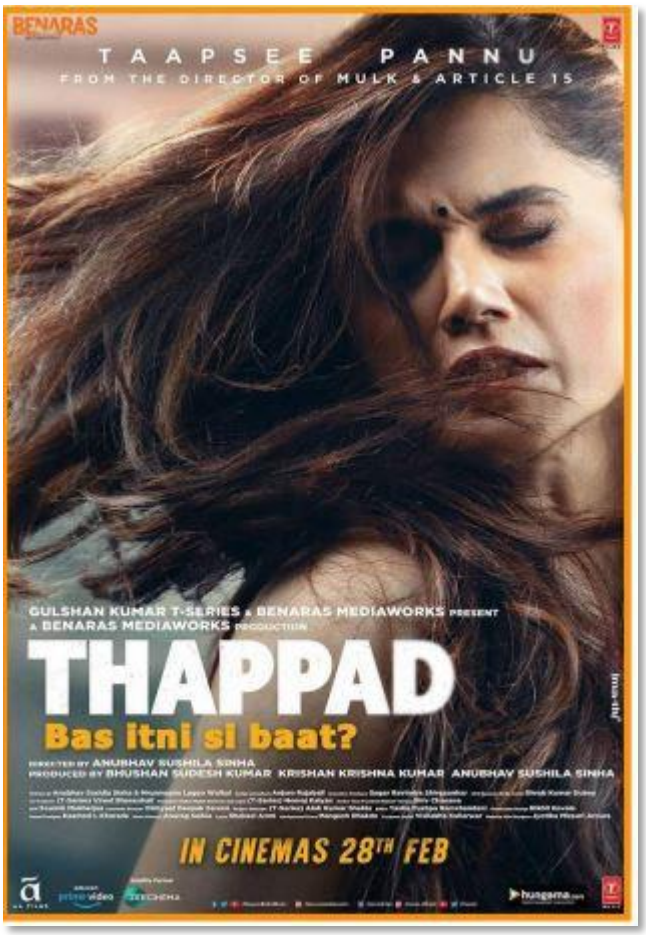

(पाठ 4 ़चत्र -1)

पाठ - 5

डायलॉग 4 : शाद़ का मतलब ह़ होता है सेक्सुअल ़रलेशऩशप जब सेक्स मे इंट्रेस्ट नह़ं था तो शाद़ करके मेऱ िजंदगी क्य़ बबार्द क़ ?

डायलॉग 4 : शाद़ का मतलब ह़ होता है, सेक्सुअल ़रलेशऩशप जब सेक्स मे इंट्रेस्ट नह़ं थतो शाद़ करकेमेऱ िजंदगी क्य़ बबार्द क़?

एक युवा प़ी से

भारतीय पुरुष़ को लगता है ़क शाद़ सेक्स करने का लाइस़स है। भारतीय माऩसकता ने यौन जीवन को ़कसी के भी जीवन से बढ़कर बना ़दया है िजसने भारत म़ बलात्कार, यौन उत्पीड़न जैसे मु़ को जन्म ़दया है। भारतीय समाज और उसके लोग़ को यह समझने क़ जरूरत है ़क सेक्स महत्वपूणर् है ले़कन म़हलाओं के़लए सम्मान भी जरुऱ है।

मेगास्टार अ़मताभ बच्चन क़ एक ़फल्म थी, िजसका नाम " ़पंक" था, जहां वह बलात्कार और यौन ़हंसा क़ पी़ड़ता के वक़ल ह़ और अदालत म़ पी़ड़ता का बचाव करते हुए कहते ह़, "नह़ं का मतलब नह़ं"।

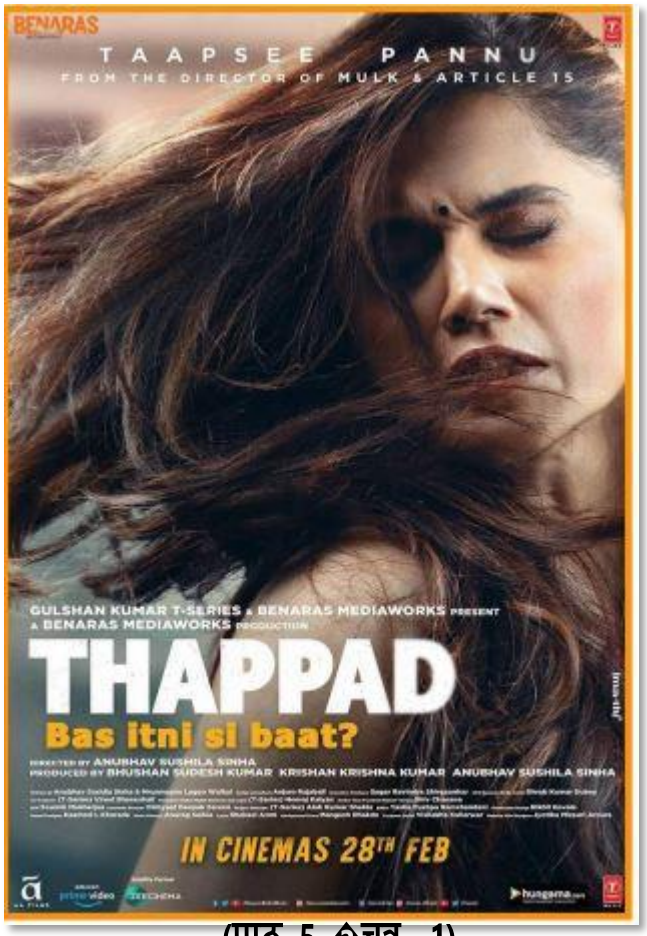

(पाठ 5 ़चत्र -1)

जब कोई म�हला कहती है ‌क उसे सेक्स करने म‌ कोई ‌दलचस्पी नह‌ं है तो पुरुष‌ को

उसक़ पसंद का सम्मान करना चा़हए वरना यह उसके शऱर पर उसके अ़धकार का उल्लंघन करना है। शाद़ म़ सेक्स के ़लए भी यह़ लागू होना चा़हए।

पाठ - 6

डायलॉग 5 : अरे तुम्हारा सारा खचार् तो उठा रहा हूँ तुम एक दो िजम्मेदा◌रयाँ तो उठा लो।

डायलॉग 5 : अरे तुम्हारा सारा खचार् तो उठा रहा हूँ, तुम एक दो िजम्मेदा◌रयाँ तो उठा लो।

एक युवा प◌ी से

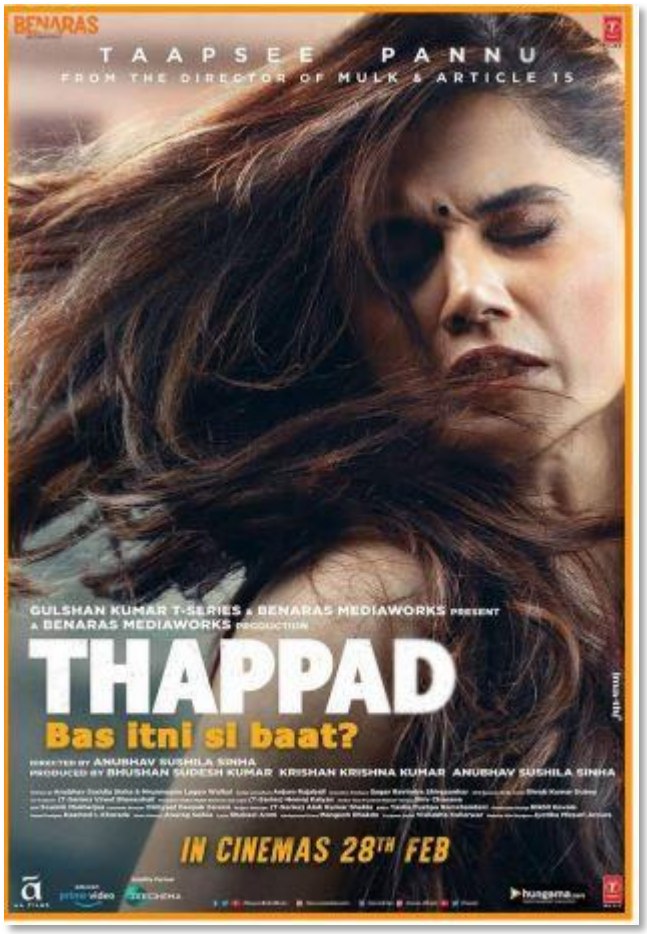

भारतीय समाज ने परंपरागत रूप से म◌हलाओं को अपने घर◌ से जुड़े सभी काम◌ को संभालने क◌ िजम्मेदार◌ द◌ है। बदलते समय के साथ म◌हलाओं ने खुद को ◌शि◌त करना शुरू ◌कया और उन्ह◌ अपने घर◌ क◌ सीमाओं से बाहर ◌नकलने का मौका ◌मला। उन्ह◌ न ◌सफर् अपने घर◌ का रोजमरार् का काम संभालना पड़ता था बिल्क काम का दबाव भी झेलना पड़ता था।

जब◌क पुरुष◌ के ◌लए यह आसान है (उनसे ◌सफर् पैसे कमाने क◌ उम्मीद क◌ जाती है), म◌हलाओं से यह देखने क◌ उम्मीद क◌ जाती है - घर म◌ राशन का स्टॉक है, घर का एसी ठ◌क से काम कर रहा है, खाना बनाना, बच्च◌

(पाठ 6 ◌चत्र -1)

क़ देखभाल करना और प़त के कपड़े धोना और कपड़ा को प्रेस करना, वे वह सारा काम करती ह़ जैसे क़ एक ऑ़फस को चलाने क़ जरूरत होती है।

क्या यह उ़चत है? क्या ह़म अपने बेट़ को नह़ं स़खाना चा़हए जैसे क़ हम अपनी बे़टय़ को घर क़ सभी ि◌जम्मेदा़रय़ को ऩभाना स़खाते ह़? क्या ह़म अपनी बे़टय़ को स्क चलाना स़खाते हुए अपने बेट़ को गोल रोट़ (चपाती) बनाना नह़ं स़खाना चा़हए? क्या इससे हमारे बढ़ते लड़क़ क़ माऩसकता म़ बदलाव आएगा? क्या वे म़हलाओं का सम्मान कऱगे और अपनी ि◌जम्मेदा़रय़ को समान रूप से ऩभाएंगे? हम इस कल्चर को व़देश़ म़ देखते ह़, उम्मीद है क़ भारतीय संस्कृ त म़ भी ऐसा ह़ होता है!

पाठ - 7

डायलॉग 6 : सुनो, एक कप चाय ?मलेगी क्या ? या तुम्हारा फे?म?नज्म इसक? इजाजत नह? देता है?

डायलॉग 6 : सुनो, एक कप चाय ?मलेगी क्या? या तुम्हारा फे?म?नज्म इसक? इजाजत नह? देता है?

एक युवा प?ी से

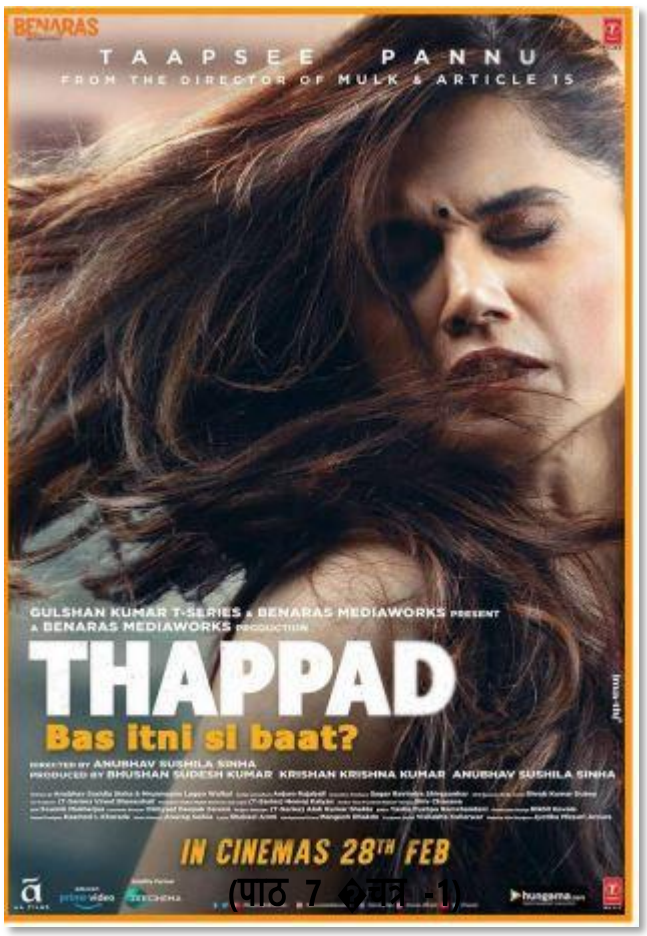

(पाठ 7 ?वन -1)

अवचेतन रूप से हमने अपने लड़क? को म?हलाओं को हल्के म? लेना ?सखाया है। और इस?लए वे ऐसा करते ह?! और ऐसा करके लड़के जीवन के हर ?ेत्र म? म?हलाओं क स्वा?भमान को क्र चलते ह?। मुझे एक कप चाय

?पलाओ? प?ी को ?सरददर् है, वह कहती हैनह?ं, म? अभी नह?ं बना सकती!

इस बात पर प?त का ताना तैयार है- आपका नार?वाद आपको मुझे एक कप चाय लाने क? अनुम?त नह?ं देता है?

अच्छा, अच्छा ठ?क है तुम जा सकती हो!

प?त के अहंकार के हाथ? क्र चला एक और म?हला का स्वा?भमान! क्र पया अपने लड़क? और लड़?कय? को शाद? को ?नभाते हुए एक-दूसरे का सम्मान करने क? आवश्यकता ?सखाएं! क्य??क यह? ?कसी भी स्वस्थ ?रश्ते क?

नींव रखेगा। या फर एक म हला को स्वणर् पदक वजेता या नार वाद होने के बावजूद हमेशा उनके साथ असमान व्यवहार होने का वचार मन म होगा!

पाठ - 8

डायलॉग 7 : ओह कमऑन यार, अगर तुम इतनी capable होती न तो मुझे से कम से कम आधा तो कमा ह� रह� होती।

डायलॉग 7 : ओह कमऑन यार, अगर तुम इतनी capable होती न तो मुझ से कम से कम आधा तो कमा ह� रह� होती।

एक युवा प�ी से

पुरुष म�हलाओं को इतना आहत करते ह� ?क वे अपने अपमान से कभी उबर ह� न ह�ं पाती ह�। उन्ह� लगता है ?क वे कभी भी पुरुष? और उनक? ?मताओं से मेल नह?ं खा सक?ती ह?। हर बार जब कोई म?हला अपने पैर? प?खड़ा होना चाहती है, तो कोई न कोई व्य?? उनक? कु छ हा?सल करने क? ?मता प? सवाल उठाता है, ि?जस पर वह हाथ रखना चाहती है। चाहे वह काम शुरू करना हो या अपना खुद का व्यवसाय चलाना।

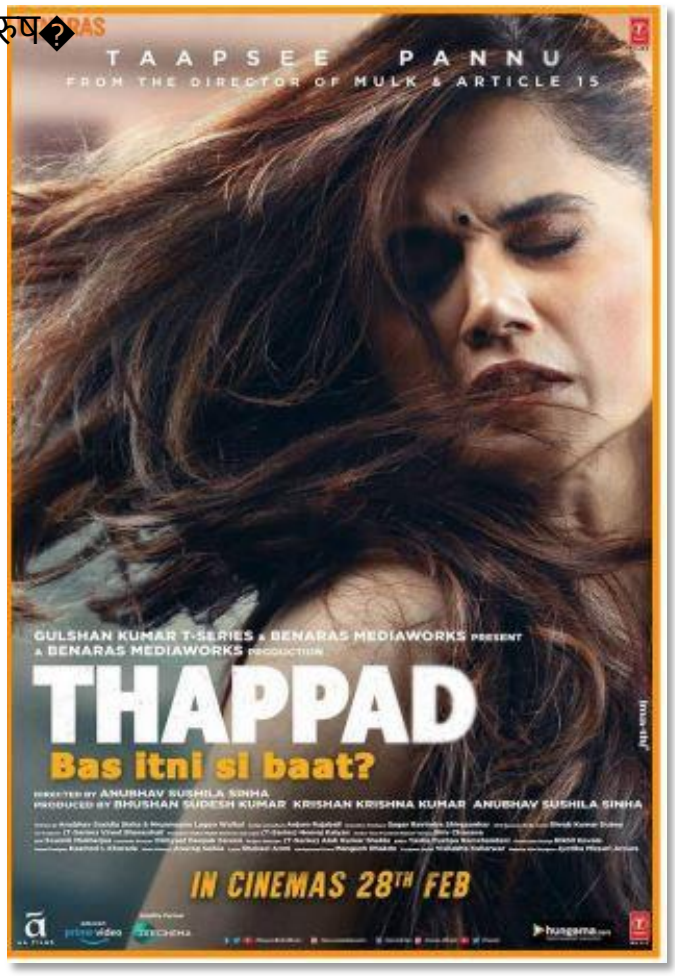

ह?म? पुरुष? को यह समझाना चा?हए ?क यह म?हलाएं अपनी प्र?तभा के साथ आगे बढ़ना चाहती है तो पुरुष? को उनके साथ (चाहे भावनात्मक, शार??रक या आ?थर्क रूप से) खड़ा होना चा?हए और उन्ह? सपोटर् करना चा?हए।

पाठ - 9

डायलॉग 8 : अरे तुमसे क्या पूछना था? तुम्ह़ इन्वेस्टम़ट का I भी पता है क्या?

डायलॉग 8 : अरे तुमसे क्या पूछना था? तुम्ह़ इन्वेस्टम़ट का I भी पता है क्या?

एक युवा प़ी से

म़हलाओं के अिस्तत्व और उनक़ ़मताओं पर सवाल उठाना ह़ वह आधार रहा है िजस पर भेदभाव उत्पन्न होता है।

आप उन्ह़ इस तरह से नीचा ़दखाते ह़ ़क वे हर कदम पर खुद से सवाल करती ह़। अगर वे ़कसी XYZ कारण से ़कसी पुरुष को तलाक देना चाहती ह़, तो उनसे पूछा जाएगा - क्या आप अपने बच्च़ को अके ले संभाल पाएंगी? क्या आप पयार्ऱ कमाई कर पाएंगी? क्या आप समाज क़ क़ठनाइय़ का सामना कर पाएंगी?

और इस प्रकार आगे भी ऐसे ह़ और सवाल। और ़फर सवाल से ़घऱ एक म़हला और ऐसी कई अन्य म़हलाएं इन क़ठनाइय़ से गुजर रह़ ह़, इन सभी आधार पर बस म़हलाय़

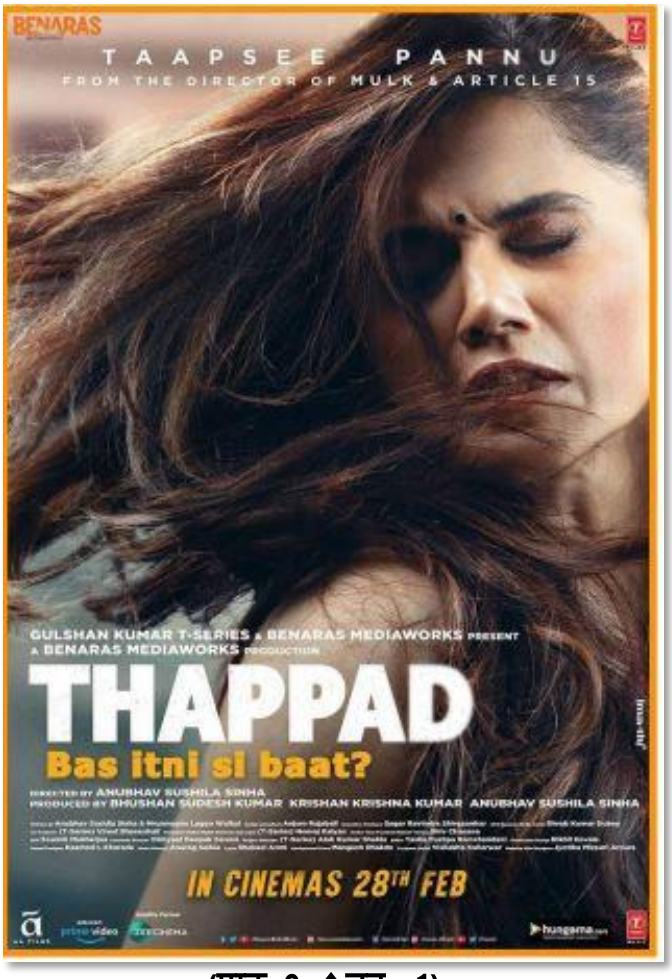

(पाठ 9 ़चत्र -1)

पाठ - 10

डायलॉग 9 : क्या तुमसे भीख माँगू सेक्स के ◌लए या अब तुम इसके ◌लए मुझ से पैसे चाजर् करोगी?

डायलॉग 9 : क्या तुमसे भीख माँगू सेक्स के ◌लए या अब तुम इसके ◌लए मुझसे पैसे चाजर् करोगी?

एक युवा प◌ी से

भारत म◌ सेक्स एक एक ऐसा ◌वषय है ◌जसके बारे म◌ बात करना विजर्त है। हर कोई इसे करना चाहता है, ले◌कन कोई इसके बारे म◌ बात नह◌ं करना चाहता। चाहे वह यौन मु◌◌, गभर् ◌नरोधक◌, प्रजनन समस्याओं, स्तंभन दोष, यौन संतु◌◌ आ◌द से संबं◌धत हो। ह◌म◌ यह सु◌नि◌त करने क◌ आवश्यकता है ◌क हम अपने बच्च◌, लड़क◌ और लड़◌कय◌ दोन◌ को सेक्स और सेक्स से संबं◌धत मु◌◌ के बारे म◌ ◌शि◌त कर◌। अगर हम ऐसा करने म◌ सफल रहे तो बलात्कार, यौन शोषण, यौन उत्पीड़न केआधे मामले कम हो जाएंगे।

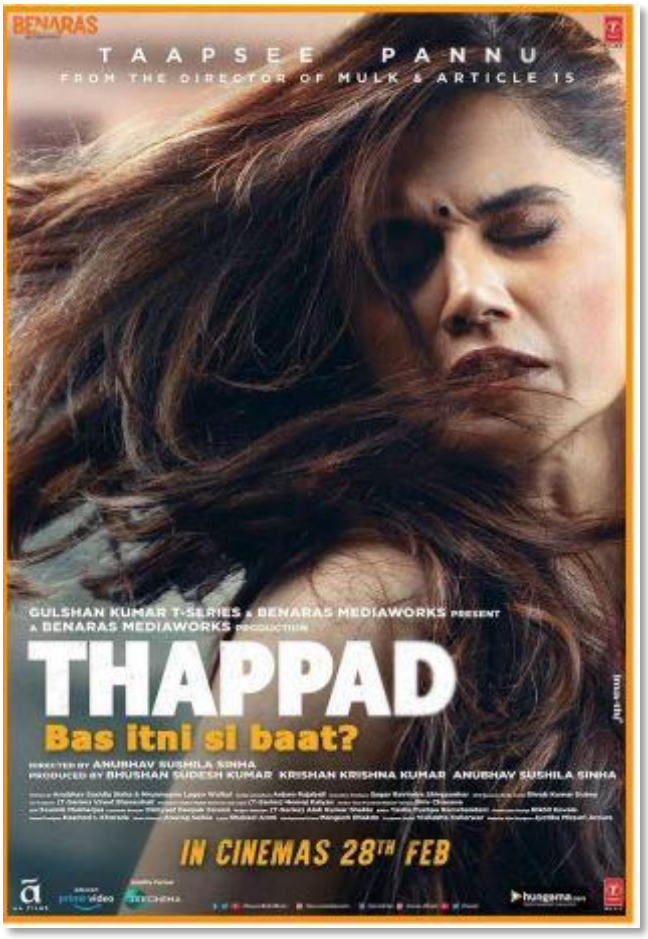

(पाठ 10 ◌चत्र -1)

पाठ - 11

डायलॉग 10 : हां, हां पता है तुम्हारा फे�म�नज्म, फे�म�नस्ट होती ना तो �सर्फ़ मेर� �सक्स �फगर

डायलॉग 10 : हां, हां पता है तुम्हारा फे�म�नज्म, फे�म�नस्ट होती ना तो �सर्फ़ मेर� �सक्स

एक युवा प़ी से

य�द आप एक आदमी को उसके पैसे के �लए पसंद करते ह�, तो यह आपको कम नार�वाद� बनाता है? **इस समाज म� कोई भी स्प� रूप से देख सकता है �क इससे उसे क्या प्रा� हो रहा है।** चाहे वह आदमी का प�रवार हो, उसका पैसा, उसक� है�सयत, उसक� कार आ�द।

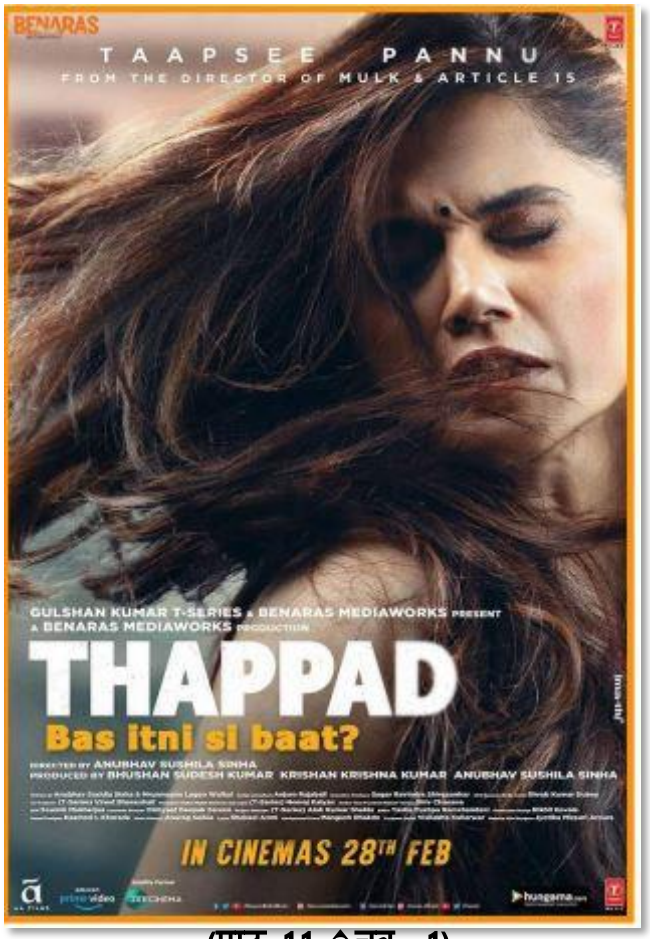

(पाठ 11 �चत्र -1)

व्य��गत रूप से, मुझे नह़ं लगता �क इस्म़ुक छ भी गलत है। कोई भी एक अच्छ़ जीवन शैली चाहता है और बिल्क कोई भी लड़क़ सब कु छ बेहतर देखकर ह़ �कसी अच्छे व्य्य से शाद़ करेगी। पुराने समय म़ भी, हमने उन राजाओं के बारे म़ सुना है जो उन रा�नय़ से शाद़ करते थे िजनके प़ता श्र्शाली होने के साथ अपने श्र्शाली साम्राज्य के राजा थे। अगर इस तरह के वैवा़हक संबंध पुरुष़ के लए अच्छे ह़, तो म़हलाओं के लए भी

इसक� अनुम�त क्य� नह�ं द� जानी चा�हए!

पाठ - 12

डायलॉग 11 : अरे दो बच्चे तो ह पाल रह हो यार कौन सा अपनी कंपनी क बज़नेस हेड हो।

डायलॉग 11 : अरे दो बच्चे तो ह पाल रह हो यार कौन सा अपनी कंपनी क बज़नेस हेड हो।

एक युवा प ी से

एक म हला न के वल 9 मह ने तक अपने गभर् म एक बच्चे को पालती है, बिल्क वह अपने बच्चे के लए हर आवश्यक चीज क व्यवस्था भी करती है। चाहे वह अपने शुरुआती वष के दौरान बच्चे को स्तनपान कराना हो, या कॉलेज जाने वाले वयस्क जो " माँ के हाथ का खाना" चाहते ह!

एक माँ को यह सब करना चा हए!

चाहे वह उसका क रयर हो जब वह अपने बच्चे को जन्म देती है और उसके बाद भी जब बच्चा बड़ा हो रहा होता है, तो वह पाटर् टाइम काम करती है ता क वह बच्चे क देखभाल कर सके । क्या एक आदमी से कभी यह उम्मीद क जाती है क वह बच्चा होने

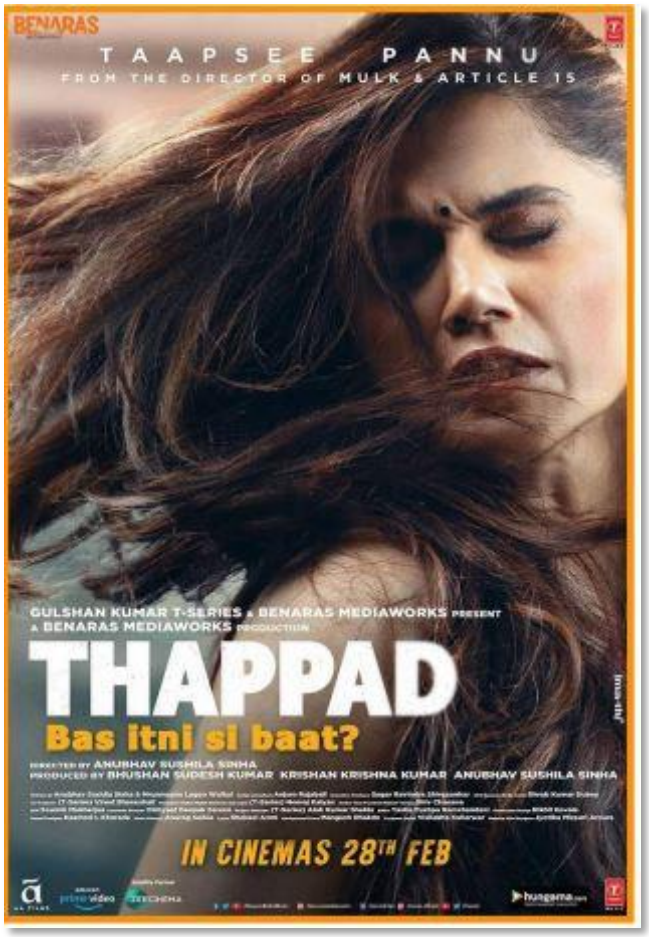

(पाठ 12 चत्र -1)

पर इन सब काम◌ को करे? क्या पुरुष बच्चे पैदा करने के ◌लए अपना क◌रयर छोड़ देते ह◌ या क्या वे पाटर् टाइम काम करते ह◌ जब उन्ह◌ अपने बच्च◌ पर पूर◌ तरह से ध्यान देने क◌ आवश्यकता होती है? इन सवाल◌ के जवाब हम सभी जानते ह◌! ले◌कन ये मु◌े आज भी कह◌ं गुम ह◌ क्य◌◌क समाज ने इन सब िजम्मेदा◌रय◌ और ब◌लदान का बोझ म◌हलाओं के कंध◌ पर रख रखा है।

पाठ - 13

डायलॉग 12 : यार ये तुम्हारा पी�रयड वाला बड़ा ड्रामा है कुछ कहो तो रोने लग जाती हो। अरे मजबूत बनो!

डायलॉग 12 : यार ये तुम्हारा पी�रयड वाला बड़ा ड्रामा है कुछ कहो तो रोने लग जाती हो। अरे मजबूत बनो!

एक युवा प�ी से

पी�रयड्स को म�हलाओं के �लए एक विजर्त �वषय के रूप म� भी देखा जाता है!

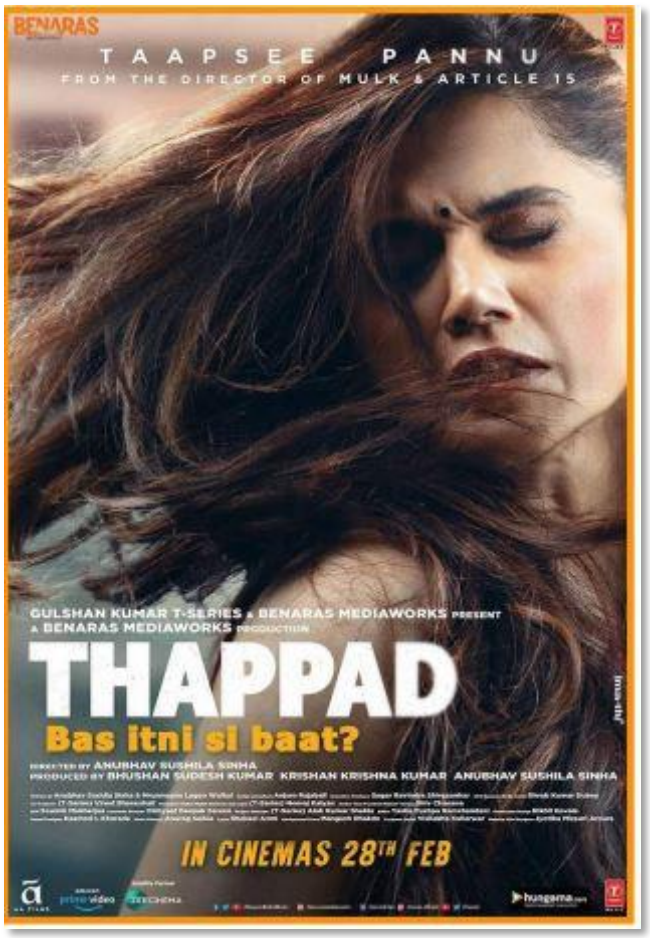

(पाठ 13 �चत्र -1)

खैर �लस्ट इतनी बड़ी है �क िजसका कोई अंत नह�ं है!

पी�रयड्स म� होने पर उनके साथ भेदभाव �कया जाता है। इसे मत छु ओ, उसे मत छु ओ और सबसे महत्वपूणर् बात यह है �क मं�दर मत जाओ! पढ़े-�लखे लोग �नि�त रूप से जानते ह� �क पी�रयड्स एक प्राकृ �तक घटना है! और �फर भी कु छ उच्च �शि�त लोग भी इन भेदभावपूणर् प्रथाओं का पालन करते ह�!

ऐसे म� हम इतने पढ़े- �लखे लोग से क्याउम्मीद कर सकते ह�?

अगर कोई लड़क� ्कसी बात से परेशान है या आम तौर पर ठ�क नह�ं है या ्कसी कारण से अजीब या अलग व्यवहार कर रह� है, तो पहली बात यह है ्क पुरुष कहते ह्ए - ्क उन्ह� पी्रयड्स क� प्रॉब्लम है या उन्ह� कोई हाम्नल समस्या हो रह� है! भले ह्ए वह ह्ए ले्कन इसका मतलब यह नह�ं है ्क वह हर मह्ने पी्रयड्स के साथ आने वाले द्द और क्क्र शता म्ं हर संभव को्शश नह�ं कर रह्ए ह्ए तो पुरुष - आपको मजबूत होने क्ं जरूरत है और एक म्हला को उसके पी्रयड्स म्ं सपोटर् करने क्ं जरूरत है! यह आपको
्कसी आदमी से कम नह�ं बना देगा!

पाठ - 14

डायलॉग 13 : प�रवार क� िजम्मेदा�रयाँ या ऑ�फस जॉब तुम्ह� खुद स�स होना चा�हए ना क्याजरूर� है?

डायलॉग 13 : प�रवार क� िजम्मेदा�रयाँ या ऑ�फस जॉब तुम्ह� खुद स�स होना चा�हए ना क्याजरूर� है?

एक युवा प�ी से

एक मंत्र जो म�हलाओं को उनके जीवन क� शुरुआत से �सखाया जाता है - सब कुछ संतु�लत करो!

अपने प�त और उसके प�रवार को संतु�लत करो!

अपनी आवश्यकताओं और अपने प�त क� ज़रूरत� को संतु�लत करो!

अपनी नौकर� और अपने प�रवार को संतु�लत करो। अपने बच्च� और अपने प�त को संतु�लत करो!

इन सभी प्रकार क� बहुत सारे संतुलन क� उम्मीद एक म�हला से रोज़ाना क� जाती है।

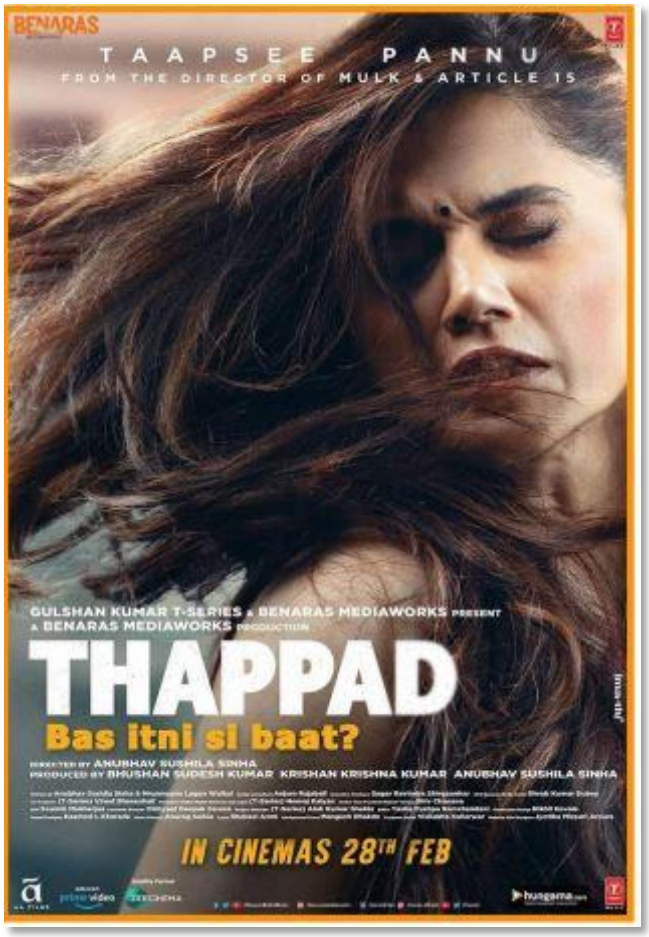

(पाठ 14 �चत्र -1)

यह एक म�हला है जो अपने पैतृक घर को छोड़कर एक �बल्कु ल नए वैवा�हक घर म� प्रवेश करती है। वह सब कुछ छोड़ देती है और अपने नए घर को सब कुछ देती है! और �फर भी उससे अनंत उम्मीद� ह�! यह �सफर् शाद� पर खत्म नह�ं होता है! बस यह�ं से शुरुआत होती है!

पाठ - 15

डायलॉग 14 : बेटा मम्मी को पेर�ट्स मी�टंग म� मत ले जाना, बेवकू फ़ वाले सवाल पूछ�गी, मैडम और डाट�गी तुम्ह�।

डायलॉग 14 : बेटा मम्मी को पेर�ट्स मी�टंग मे मत ले जाना, बेवकू फ़ वाले सवाल पूछ�गी, मैडम और डाट�गी तुम्ह�।

एक युवा प़ी से

माँ माँ होती ह़

और इसी�लए जब भी हम म़ से क़सी को भी कोई समस्या या परेशानी या छोट़-छोट़ झ़हचक़ आती है, तो सबसे पहला शब्द हम कहते ह़ "माँ"!

क्य़क एक माँ अपनी क्षमता से सब कुछ करेगी और अपने बच्चे को क़सी भी तरह से सहारा देने के लए अपनी क्षमता से परे वह सब कुछ करेगी! स्कूल म़, वे यह सु़नि़त करने के लए सभी प्रकार के प्ऱ पूछना चाह़गी क उनका बच्चा अच्छा कर रहा है और क़सी बुऱ संगत म़ तो नह़ं है।

यह एक छोटा सा काम लगता है, ले़कन यह बच्चे के सह़ क्षदशा म़ क्षवकास को सु़नि़त

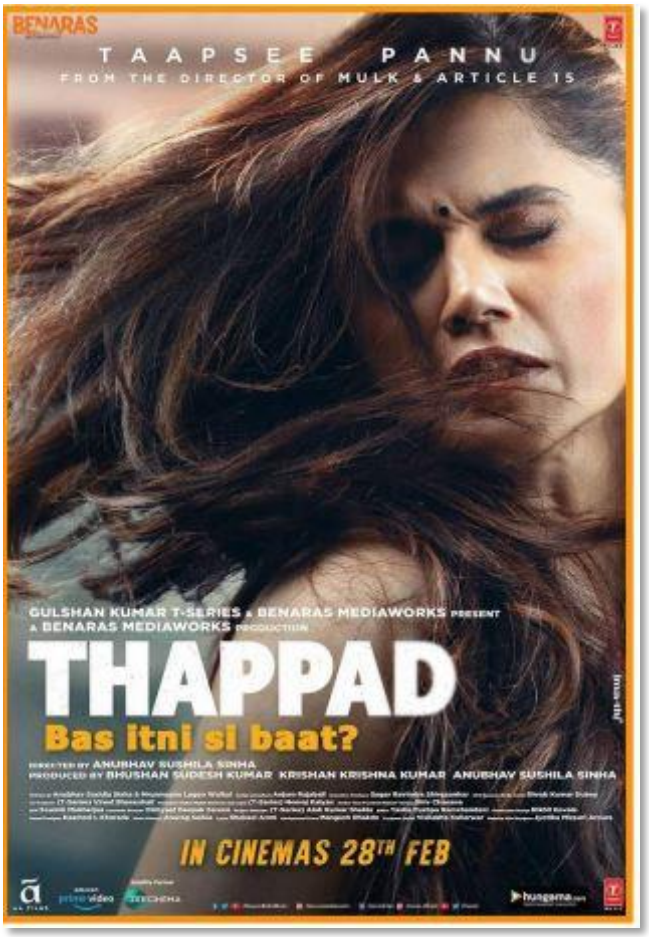
BENARAS
TAAPSEE PANNU
FROM THE DIRECTOR OF MULK & ARTICLE 15
GULSHAN KUMAR T-SERIES & BENARAS MEDIAWORKS PRESENT
A BENARAS MEDIAWORKS PRODUCTION
THAPPAD
Bas itni si baat?
DIRECTED BY ANUBHAV SUSHILA SINHA
PRODUCED BY BHUSHAN SUDESH KUMAR KRISHAN KRISHNA KUMAR ANUBHAV SUSHILA SINHA
IN CINEMAS 28TH FEB
prime video
hungama

(पाठ 15 चित्र -1)

करने के ◌लए एक लंबा रास्ता तय कर सकता है। मूखर्तापूणर् प्र◌ ह◌ या न ह◌, माता-◌पता और ◌वशेष रूप से एक माँ को अपने बच्चे के बारे म◌ वह सब कु छ पूछने का अ◌धकार है जो वह जानना चाहती है। तभी वे अंदाजा लगा पाएंगी ◌क उनका बच्चा अपने स्कू ल म◌ कै सा कर रहा है। ◌दवंगत बॉलीवुड अ◌भनेत्री श्रीदेवी क◌ एक ◌फल्म थी, िजसका नाम था ***" इंि◌ग्लश ◌वंि◌ग्लश"*** जहां श्रीदेवी (मां) वास्तव म◌ एक ◌शि◌त म◌हला नह◌ं है

और कैसे वह अपने जीवन के बहुत समय बाद के चरण म◌ अंग्रेजी भाषा सीखकर अपना स्वा◌भमान अिजर्त करती ह◌। यह सब ◌सफर् यह सु◌नि◌त करने के ◌लए था िजससे ◌क उनके बच्चे और उनका प◌त उनके साथ सम्मान से पेश आएं!

पाठ - 16

डायलॉग 15 : अपने आप को देखो जरा दो बच्च� क� माँ ह� पर लगती पांच बच्च� क� हो मुझे दोष मत देना अगर मेरा कोई दूसरा अफे यर हो जाये।

डायलॉग 15 : अपने आप को देखो जरा दो बच्च� क� माँ ह� पर लगती पांच बच्च� क� हो मुझे दोष मत देना अगर मेरा कोई दूसरा अफे यर हो जाये।

एक युवा प�ी से

म�हलाओं से हर समय अच्छे �दखना और उ�म होने क� उम्मीद क� जाती है! अपनी उम्र से कम �दखना!

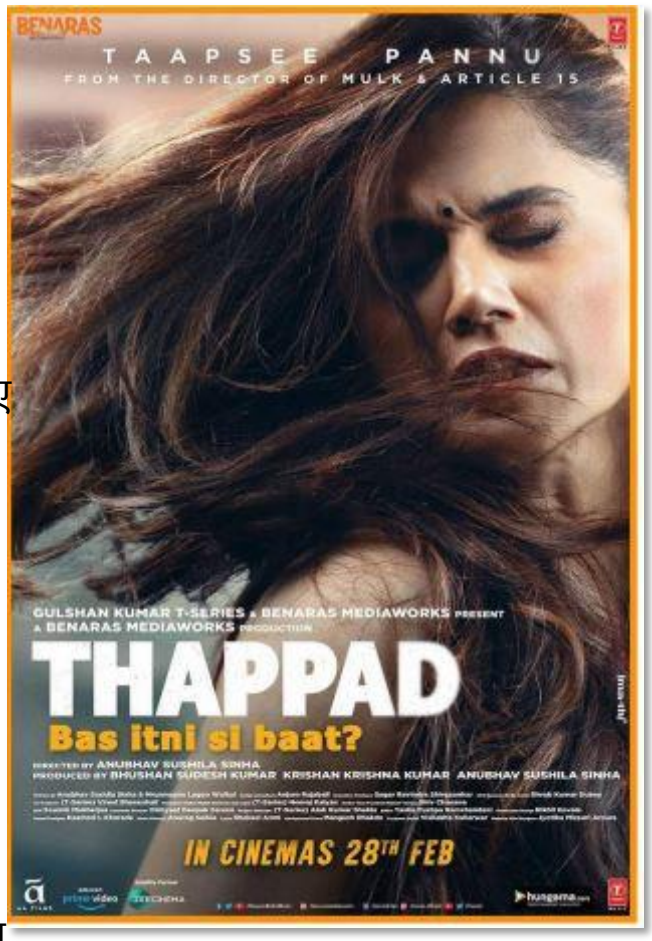

क्या आपने कभी पुरुष� को कॉस्मे�टक सर्जर�करवाते हुए सुना है?

म�हलाओं को सुंदर और सुंदर �दखने के �लए ताना मारना एक आम बात है (अवधारणाएं जो व्य��परक ह�), बसइस�लए�क पुरुष अपनी पि�य� को अपनी ट्रॉफ़ी �दखा सक!? एक म�हला को जन्म देना होता है, इस प्र�क्रया म� उसका वजन बढ़ जाता है(जो स्वाभा�वक है)। ले�कन प्रसव के बाद के कुछ मह�न म� उसे अपना वजन कम करने क� उम्मीद क� जाती है, �सफर् इस�लए�क उसका प�त और समाज चाहता है�क वह अच्छ� �दखे!

(पाठ 16 चित्र -1)

पाठ - 17

डायलॉग 16 : अरे, मेरा घर, मेरा घर बोलना छोड़ो यार, अब अपने ससुराल को अपनाओ अब ये है तुम्हारा घर।

डायलॉग 16 : अरे, मेरा घर, मेरा घर बोलना छोड़ो यार, अब अपने ससुराल को अपनाओ अब ये है, तुम्हारा घर।

एक युवा प�ी से

एक म�हला शाद� के बाद अपना पैतृक घर छोड़ देती है। उसक� दुदर्शा क� कल्पना करो। लगभग २५ (जब तक आपक� शाद� नह�ं हो जाती) साल तक उसने अपने पूरे जीवन म� कु छ प्रथाओं, तर�क�, प्रणाली को देखा और सीखा है और शाद� के बाद अचानक जो कु छ भी उसने सीखा है वह उसे भूल जाएं और वैवा�हक घर के सभी नए तर�क़े के साथ खुद्को बदल�!

क्या यह इतना आसान है? (एक मजाक)!

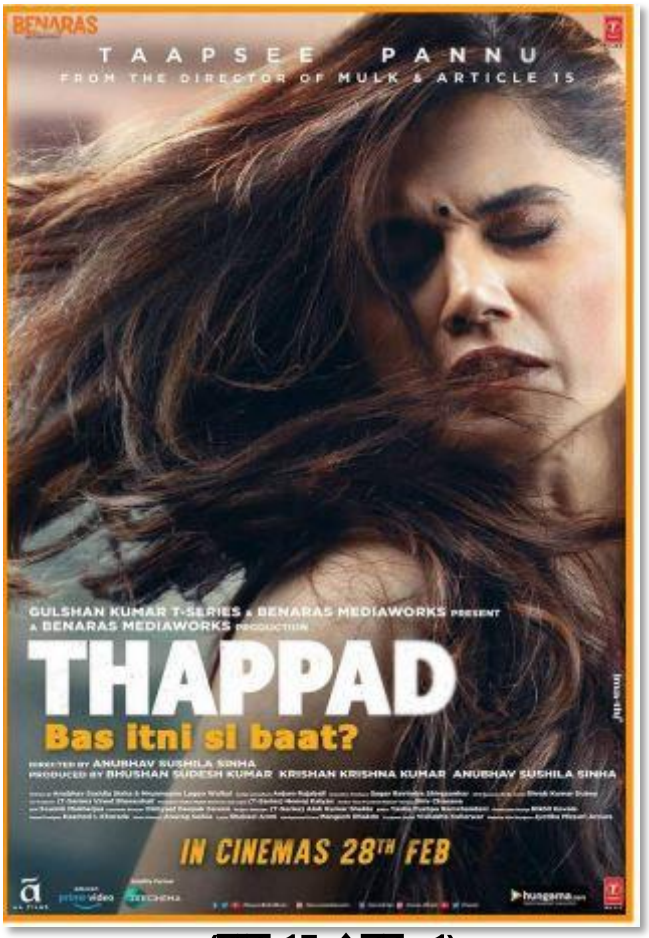

(पाठ 17 चित्र -1)

पाठ - 18

डायलॉग 17 : अब सैलर् मुझे से ज्यादा क्या हो गयी तो नौकर समझोगी मुझे।

डायलॉग 17 : अब सैलर् मुझे से ज्यादा क्या हो गयी तो नौकर समझोगी मुझे।

एक युवा प्ी से

पुरुष का अहंकार सेकं ड् म् एक सुखी ्वह को न् कर सकता है।

म्हलाओं को पुरुष् के अधीन रहने के ्लए कहा जाता है ता्क वे पुरुष के अहंकार को चोट न पहंुचाएं!

अपने प्त से ज्यादा मत कमाओ।

प्त से बहस न करो, प्त क् हर बात मानो!

क्य्?

्सफर् अपने प्त होने के तथाक्थत अहंकार को संतु् करने के ्लए!

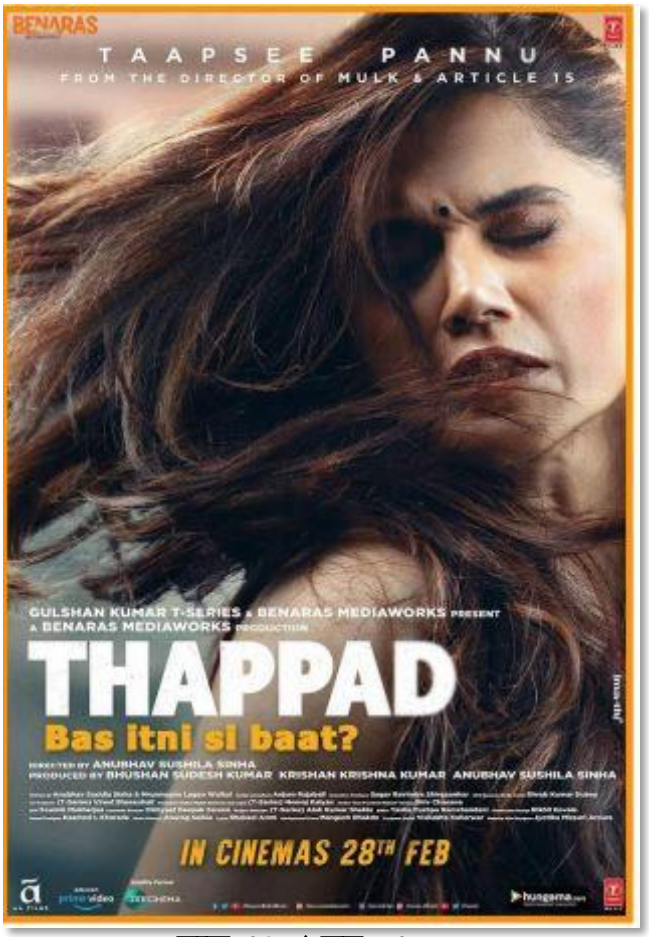

(पाठ 18 ्चत्र - 1)

पाठ - 19

डायलॉग 18 : एक और प्रमोशन? लगता है तुम्हारा बॉस लक� नह�ं है।

डायलॉग 18 : एक और प्रमोशन? लगता है तुम्हारा बॉस लक� नह�ं है।

एक युवा प�ी से

एक म�हला से उसके च�रत्र पर सवाल क्स एक शॉट म� म�हला के कॉ न्फड�स क� ह्यकरना है!

आपको बस इतना करने क� जरूरत है - सवाल यह है �क वह अपने काम म� श्रे क्य� है? क्या आप कु छ और कर रहे ह्र? काम के अलावा जो आपके बॉस को खुश रखता है? यह और कु छ नह�ं बिल्क एक आभास है जो एक म�हला के च�रत्र के बारे म्र एक नकारात्मक अथर् अथर् को दशार्ता है।

पुरुष को भी हर समय बढ़ावा दया जाता है? ले कन उससे पूछने क� हम्मत कसम है क्या उसका बॉस (जो क एक म�हला भी हो सकती है) – भी लक है?

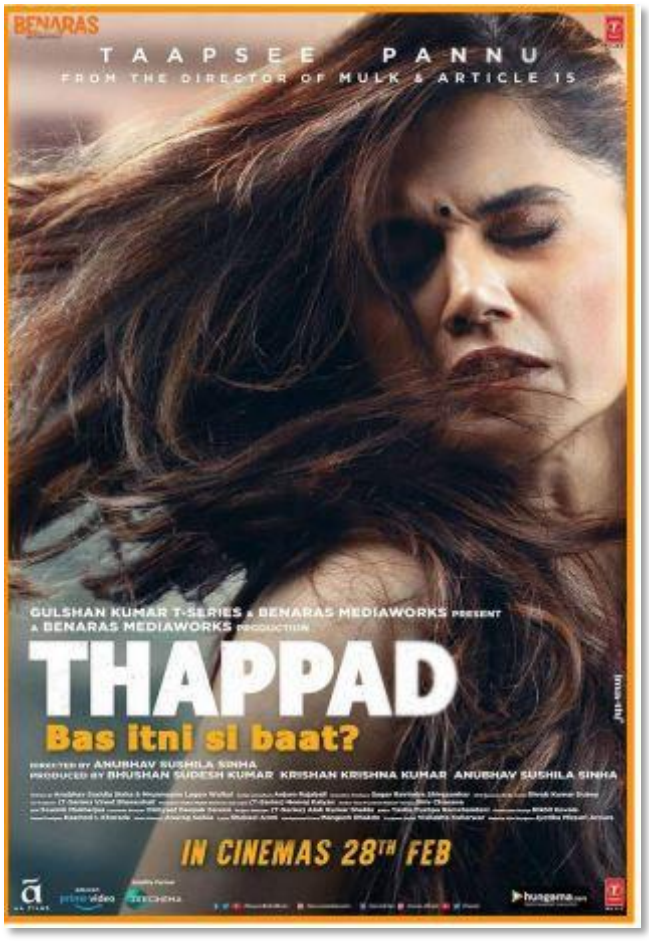

(पाठ 19 चत्र -1)

पाठ - 20

डायलॉग 19 : यार ?कतनी बेकार लग रह? हो शॉट्सर् म? अब अपनी उम्र और साइज देखो यार!

डायलॉग 19 : यार ?कतनी बेकार लग रह? हो शॉट्सर् म? अब अपनी उम्र और साइज देखो यार!

ओह अच्छा! ***आपको अपनी उम्र के ?हसाब से तैयार होना चा?हए!*** हम इस कथन को ?कतनी ह? बार सुनते ह??

जब आप छोटे होते ह? - शॉट्सर् मत पहनो, पुरुष? को गलत ?वचार आते ह??

जब आप थोड़े बड़े होते ह? - शॉट्सर् मत पहनो - तुम्हारे ?फगर पे सूट नह?ं होता?

जब आप और भी बड़े होते ह? - शॉट्सर् मत पहनो - तुम्हार? उम्र पे ये सब सूट नह?ं करता?

अच्छा - क्या ?कसी ने पुरुष? से शॉट्सर् पहनना बंद करने के ?लए कहा है क्य??क वे एक ?वशेष उम्र के ह??

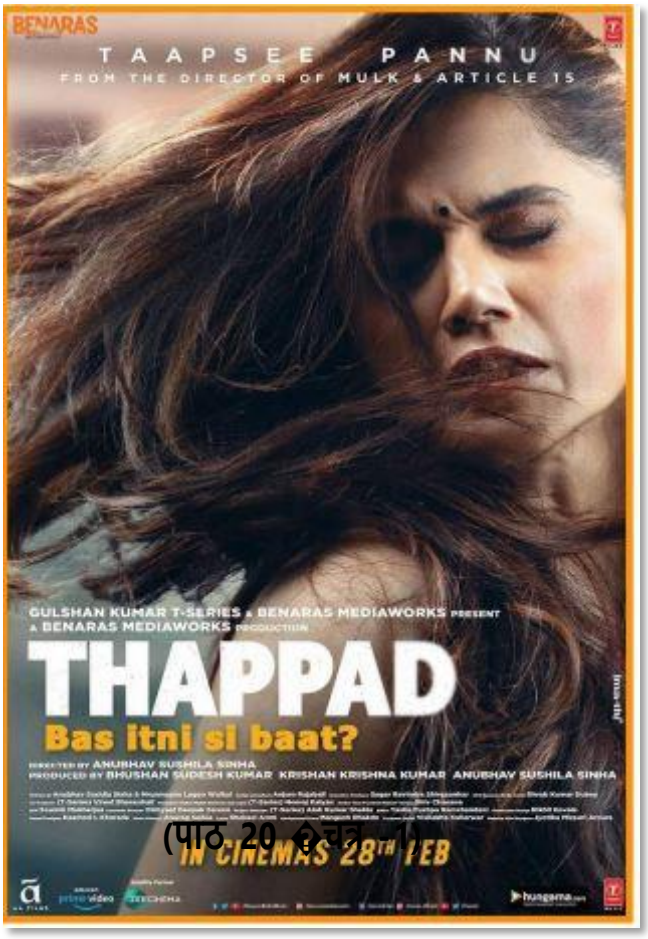

(पाठ 20 ?च? 1)

?क म?हलाएं उन्ह? घूर?गी? ?क वे अब शाद?शुदा ह? या ?क वे एक ?वशेष उम्र म? ह??
?फर ये बात? ?सफर् म?हलाओं पर ह? क्य? लागू ह?
क्या यह ल??गक भेदभाव नह?ं है?

पाठ - 21

डायलॉग 20 : अगर प्रेशर नह�ं ले सकती हो तो जॉब छोड़ दो ना वैसे भी अपने दोन� के ल्ए म्�पयार्� पैसे कमाता हँू।

डायलॉग 20 : अगर प्रेशर नह�ं ले सकती हो तो जॉब छोड़ दो ना वैसे भी अपने दोन� के ल्ए म्�पयार्� पैसे कमाता हँू।

एक युवा प�ी से

म�हलाओं से अपे�ा क� जाती है क वे अपने जीवन को संतु�लत कर�, चाहे वह उनके ल्ए
क्तना भी क�ठन क्य न हो। काम और ऑ�फस, बच्च और प�त आ�द को संतु�लत कर�। य�द आप इन सब काम को एक दन के ल्ए भी नह�ं कर पा रहे ह - तो आपको सबसे पहली बात यह बताई जाएगी क आपको अपनी नौकर छोड़ देनी चा�हए? म अपने प�रवार के ल्ए पयार्
कमाता हँू! तो म यह कहना चाहंूगा क ओह प्रय प�तय - आप अपनी नौकर क्य नह�ं छोड़ देते, और क्य नह�ं सब कुछ संतु�लत कर लेते ह और म आपसे ज्यादा पैसा कमा सकती हँू? क्या

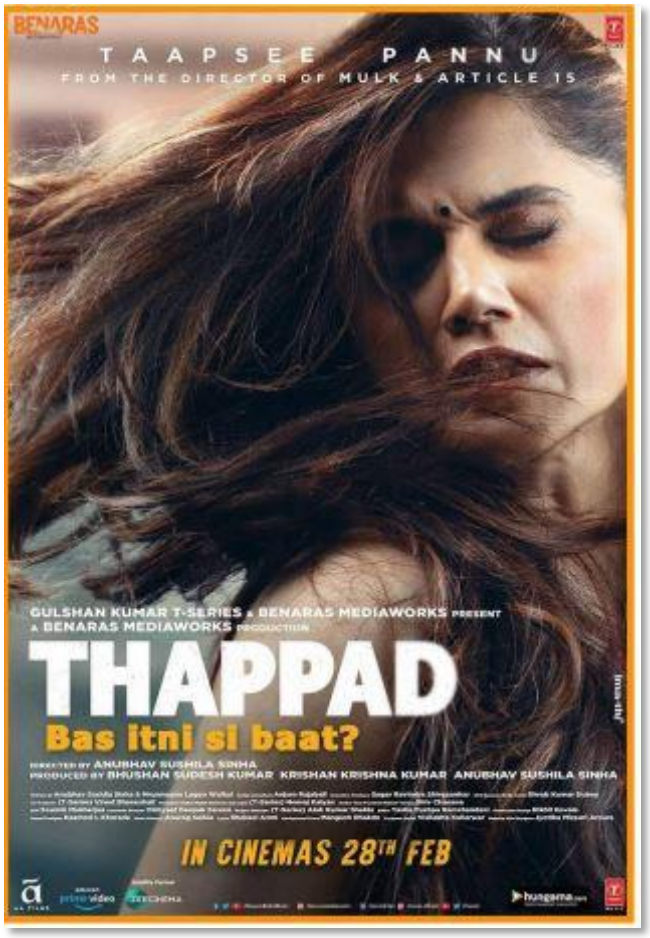

यह तुम पर काम करेगा?

(पाठ 21 ◆चत्र -1)

पाठ - 22

डायलॉग 21 : क्या सारे मजे अपने पुराने बॉयफ्र�ड के साथ कर ल्लए जो शाद़ के बाद सेक्स मे इंट्रेस्ट नह़ं रहा तुम्हारा।

डायलॉग 21 : क्या सारे मजे अपने पुराने बॉयफ्र�ड के साथ कर ल्लए जो शाद़ के बाद सेक्स मे इंट्रेस्ट नह़ं रहा तुम्हारा।

एक युवा प़ी से

विजर्नट एक नै़तक प्रमाण पत्र क़ तरह है ि़जसे प्रत्येक के पास होना चा़हए य़द वे म़हलाएं ह़, खासकर भारतीय म़हलाएं जो शाद़ करना चाहती ह़? क्या यह प्ऱ भारतीय पुरुष़ पर लागू होता है?

यहां तक क एक बेहद शि़त और पढ़ा-ल़खा व्य़ भी क़सी म़हला से पूछ सकता है क क्या वह शाद़ से पहले से विजर्न है। ऐसे व्य़ के पास यह कैसी श़ा है ज अत्य़धक सं़दग्ध है! क्या के वल विजर्नट ह़ एक म़हला और उसके च़रत्र को प़रभा़षत कर सकता है?

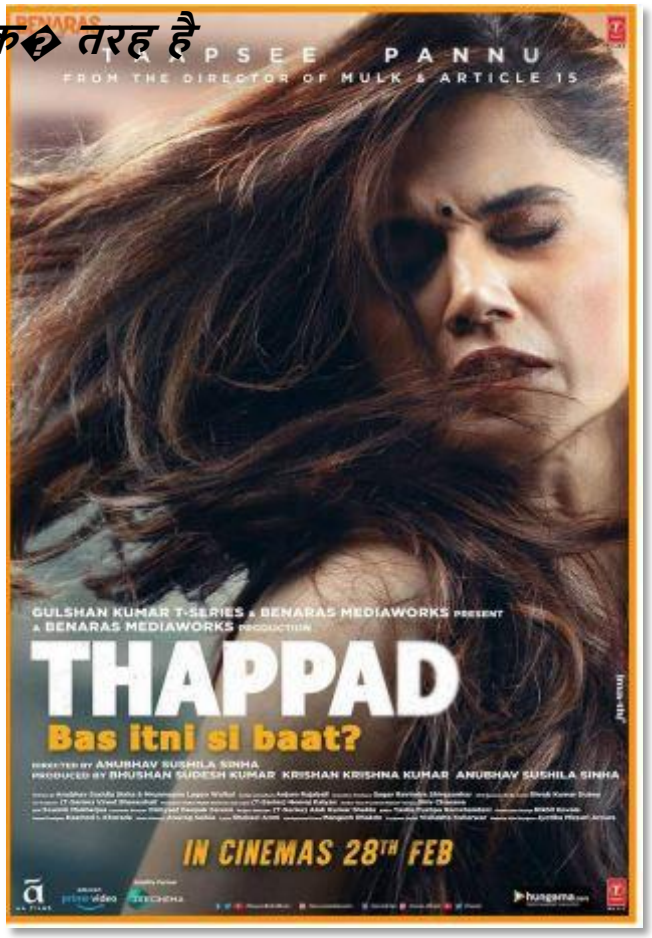

(पाठ 22 ़चत्र -1)

पाठ - 23

डायलॉग 22 : अरे मम्मी कम से कम अच्छ� होममेकर तो थी तुम तो घर पर भी एवरेज हो और ऑ�फस म� भी एवरेज हो।

डायलॉग 22 : अरे मम्मी कम से कम अच्छ� होममेकर तो थी तुम तो घर पर भी एवरेज हो और ऑ�फस म� भी एवरेज हो।

एक युवा प�ी से

माताओं और पि�य� के बीच तुलना एक भारतीय प�रवार म� एक औसत �दन म� देखी जा सकती है! ओह मेर� माँ तुमसे बेहतर खाना बनाती है। ओह मेर� माँ क� संगीत म� तुमसे बेहतर चॉइस है| ओह मेर� माँ एक �वशेष/ श्रे� गृ�हणी ह!! अच्छा मेरा जवाब यह है �क - ओह तो �फर तुम्हार माँ अपने बेटे क बेहतर परव�रश क्य नह�ं कर सक!

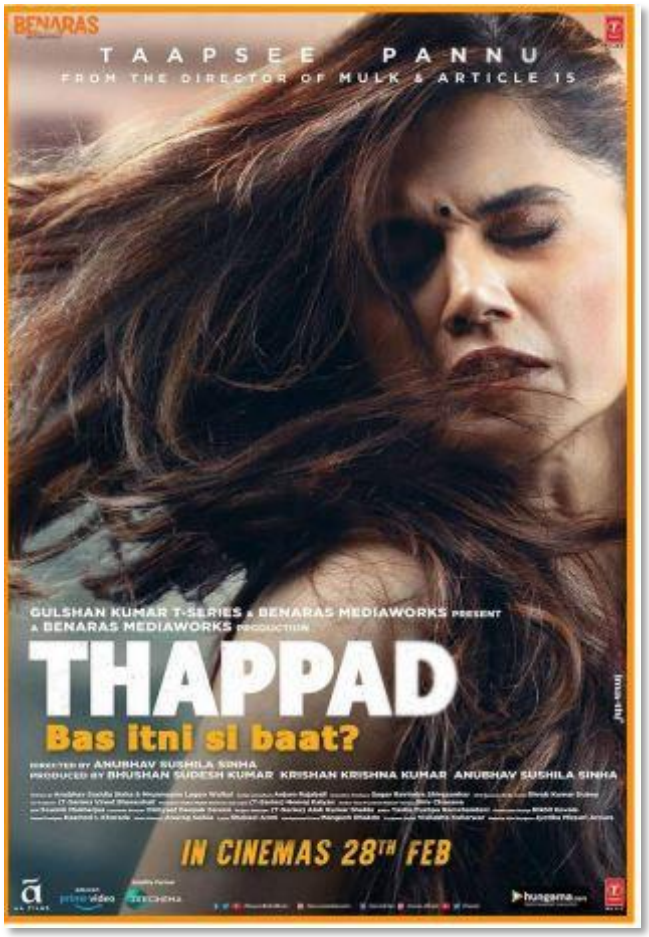

(पाठ 23 �चत्र -1)

पाठ - 24

डायलॉग 23 : थप्पड़ ◌ सफर वह नह◌ं है जो चेहरे पर आकर लगता है थप्पड़ वो हर एक शब्द है जो सीधे आत्मसम्मान पर हमला करता है।

डायलॉग 23 : थप्पड़ ◌ सफर वह नह◌ं है जो चेहरे पर आकर लगता है थप्पड़ वो हर एक शब्द है जो सीधे आत्मसम्मान पर हमला करता है।

एक युवा प◌ी से

आज क◌ भागदौड़ भर◌ िजंदगी म◌ जरूर◌ है
◌क ***पुरुष म◌हलाओं का सम्मान कर◌*** और ह्रसंभव मदद भी कर◌। यह जरूर◌ नह◌ं है ◌क
एक थप्पड़ केवल महसूस ◌कया जाए और देखा जाए, कुछ ◌न◌हत ◌टप्पिणय◌ / ◌वचार◌ / प्र◌◌ को म◌हलाओं ◌ारा हर रोज महसूस ◌कया और देखा जा सकता है और ये जरूर◌ नह◌ं ◌क यह दूसर◌ ◌ारा देखा या महसूस ◌कया जा सके!

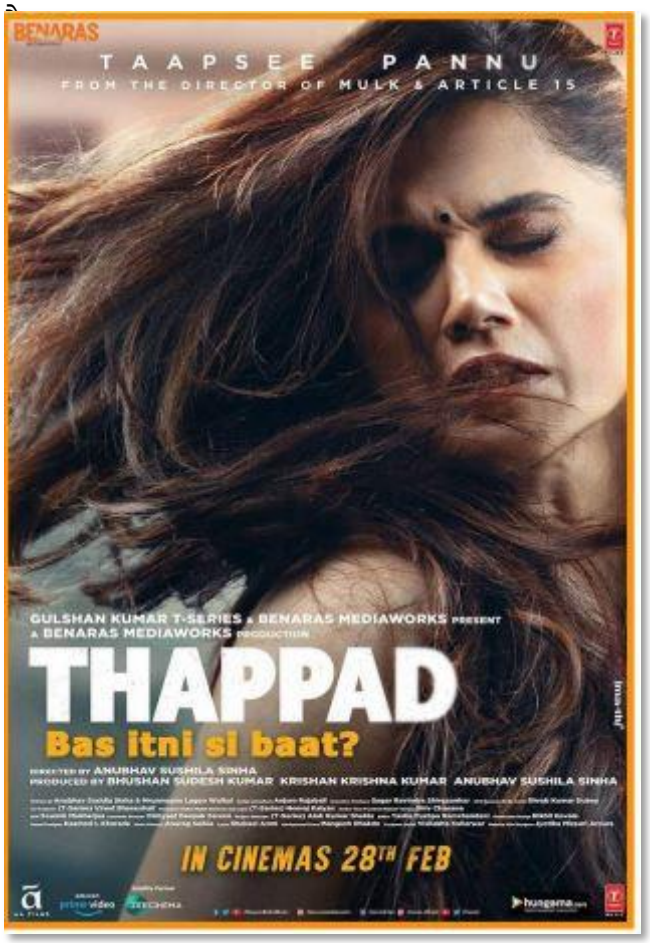

उदाहरण के ◌लए-एक प◌त अपनी प◌ी से पूछता है- " मुझे चाय ◌पलाओ" , या " क्या वह भी तुम्हारे ◌लए नार◌वाद◌ है?" यह म◌हला के चेहरे पर एक अनदेखा तमाचा

ह◆ है जो उसके
◆व◆ास और अखंडता पर सवाल उठाता है।

(पाठ 24 ◆चत्र -1)

पाठ - 25

डायलॉग 24 : थप्पड़ ◌्सफ़र् वह नह◌ं जो हाथ उठाकर मार ◌दया। थप्पड़ हर एक वो सोच है ◌िजसने जब चाहा नज़र से उतार ◌दया।

डायलॉग 24 : : थप्पड़ ◌्सफ़र् वह नह◌ं जो हाथ उठाकर मार ◌दया। थप्पड़ है हर एक वो सोच है ◌िजसने जब चाहा नज़र से उतार ◌दया।

एक युवा प◌ी से

लोग◌ का म◌हलाओं के बारे म◌ कु छ बात◌ के सोचने और मानने का यह◌ तर◌का है, ◌िजसे
बदलना चा◌हए! तभी म◌हलाएं पूरे ***स्वा◌भमान और सत्य◌न◌ा*** के साथ अपने पैर◌ पर ख◌ड़ी
हो सक◌गी, ◌िजसक◌ वे हकदार ह◌। समाज को म◌हलाओं को उनके ◌ारा पहने जाने वाले कपड़◌ या उनके बाल◌ क◌ स्टाइल के आधार पर भेदभाव करना बंद करने क◌ आवश्यकता है! यह उनक◌ पसंद है और आपको इसका सम्मान करना चा◌हए!

समाज के लोग◌ को अपनी ◌व◌ास प्रणाली को बदलने क◌ जरूरत है! तभी म◌हलाएं ◌सर ऊं चा करके अपना जीवन

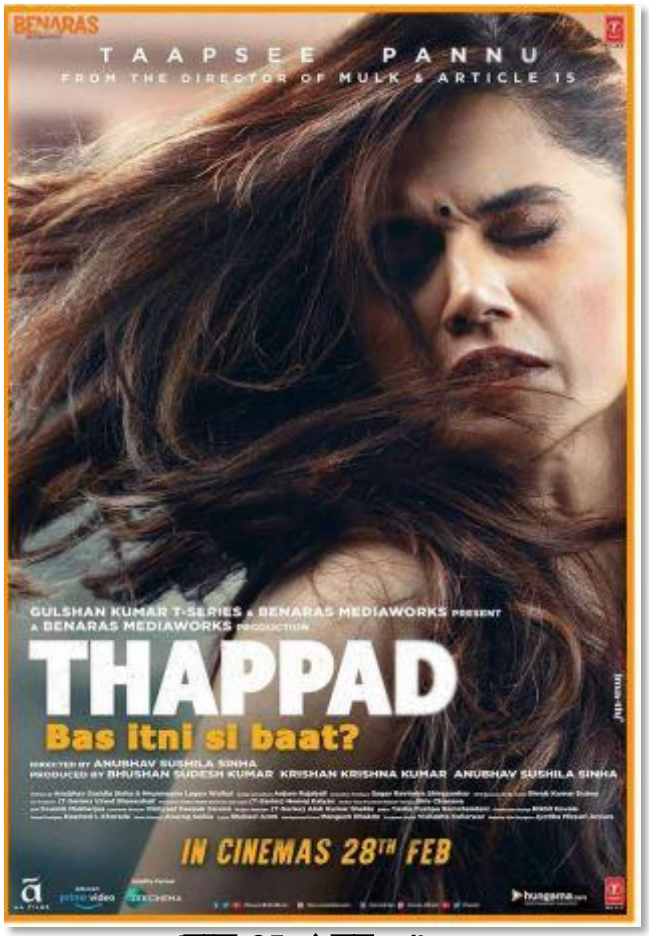

(पाठ 25 ◌चत्र -1)

व्यतीत कर पाएंगी! क़ पया बेटे-बे�टय� को
समान रूप से पाल�!

पाठ - 26

डायलॉग 25 : वह बस एक थप्पड़ नह◌ं, एक ◌रश्ते, एक भरोसे, बराबर◌ क◌ नीलामी थी।

डायलॉग 25 : वह बस एक थप्पड़ नह◌ं, एक ◌रश्ते, एक भरोसे, बराबर◌ क◌ नीलामी थी।

एक युवा प◌ी से

◌कसी भी ◌रश्ते म◌ ◌व◌ास जरूर◌ है! क बार जब आप उस भरोसे को तोड़ देते ह◌, तो उसे वापस पाने के ◌लए कु छ भी करने के बावजूद आपके ◌रश्ते म◌ एक गांठ बनी रहती है! यह आपके ◌रश्ते पर ◌सफर् एक तमाचा नह◌ं है, यह हर उस चीज पर एक तमाचा है िजसके ◌लए आप खड़े थे!

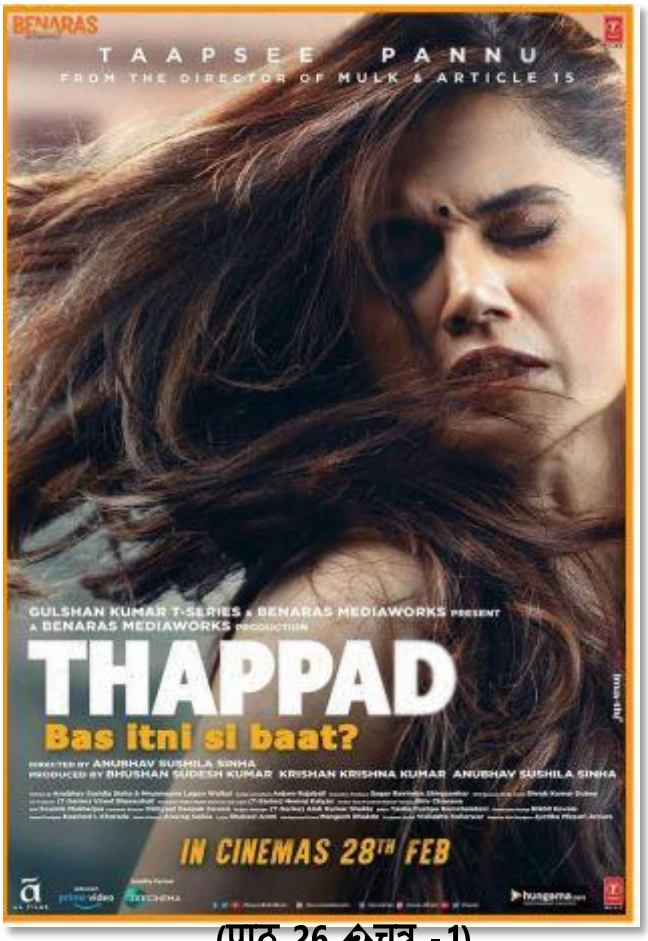

(पाठ 26 ◌चत्र - 1)

भारत और दु◌नया भर म◌ मी टू आंदोलन के चलते मुझे यह महसूस हुआ ◌क यह स◌ा या और बहुत से पॉवर म◌ रहने वाले लोग◌ केमुंह पर एक तमाचा था। यह उन म◌हलाओं क◌ कहानी थी िजन्ह◌ने जीवन के सभी ◌ेत्र◌ म◌ ल◌◌गक भेदभाव और प◌पात से लड़ाई लड़◌! मुझे लगता है ◌क म◌हलाओं के साथ अनु◌चत व्यवहार से नार◌वाद का उदय होता है और उम्मीद है ◌क नार◌वाद ह◌म◌ समान बनने म◌

मदद करेगा - चाहे वह घर पर हो, काम पर हो या अन्य ◆कसी जगह!

पाठ - 27

डायलॉग 26 : मेऱ तरफ से सामाि◌जक व्यवस्था और ल़़गक भेदभाव केनाम पर यह 21 थप्पड़़ क़ सलामी थी।

डायलॉग 26 : मेऱ तरफ से सामाि◌जक व्यवस्था और ल़़गक भेदभाव केनाम पर यह 21 थप्पड़़ क़ सलामी थी।

(पाठ 27 ़चत्र -1)